गैटिसबर्ग में कब्रिस्तान के समर्पण
के अवसर पर दिया गया भाषण

सत्तासी वर्ष पहले हमारे पूर्वजों ने इस महाद्वीप में स्वाधीनता से अनुप्राणित एवं मानव की जन्मजात समता में आस्था के प्रति समर्पित एक नये राष्ट्र को जन्म दिया था।

आज हम एक महान् गृह-युद्ध में रत हैं; यह इस बात की परीक्षा है कि हमारा राष्ट्र अथवा इसी तरह अनुप्राणित और ऐसी ही आस्था के प्रति समर्पित कोई अन्य राष्ट्र दीर्घकाल तक टिक सकता है या नहीं। हम उस युद्ध की महान् रणभूमि पर एकत्र हैं और इस भूमि का एक भाग, इस राष्ट्र को जीवित रखने में अपने प्राणों की आहुति देने वाले वीरों को, चिर विश्राम करने के लिए, भेंट करने आए हैं। हमारी ओर से यह भेंट सर्वथा उपयुक्त और उचित है।

किन्तु व्यापक दृष्टि से, अब न तो हम इस स्थान को भेंट ही कर सकते हैं और न उसे धर्मक्षेत्र या तीर्थ ही बना सकते हैं। यहां युद्ध करने वाले जीवित या वीरगति प्राप्त शूरमाओं ने स्वयं ही इसे ऐसी पुण्य-भूमि और तीर्थ बना दिया है कि हमारी तुच्छ क्षमता इसमें कुच्छ भी घटा या बढ़ा नहीं सकती। हम यहां जो कह रहें हैं उस पर संसार बहुत कम ध्यान देगा। उसे अधिक समय तक याद भी नहीं रखेगा; किन्तु हमारे शहीदों ने जो यहां किया है, उसे संसार कभी न भुला सकेगा। अब तो, यह, हम जीवितों का कर्तव्य हो जाता है कि जिस कार्य को ये शहीद अपने महान् यत्नों से आजतक आगे बढ़ाते रहे उसका शेष भाग सम्पन्न करने के लिए अपने आप को समर्पित करदे। अब तो हमें ही उस महान् अनुष्ठान को पूरा करना है, हमें ही उन सम्मान्य शहीदों से उस ध्येय के लिये उत्तरोत्तर परायणता प्राप्त करनी है जिसके लिए उन्होंनें सम्पूर्ण निष्ठा से अपनी बलि दे दी। आज हम प्रण करें कि अपने हुतात्माओं की बलि व्यर्थ न जाने देंगे। ईश्वर की अनुकम्पा से इस राष्ट्र में एक नए स्वातन्त्र्य का आविर्भाव होगा तथा जनता के द्वारा जनता के हेतु जनता का शासन इस पृथ्वी पर कभी नष्ट न होगा।

अब्राहम लिंकन

नवंबर १९, १८६३

अनुवादक डा० गोपाल शर्मा